अवन्तिका कृषि अमृत

"त्रैमासिक कृषि तकनीकी संचार दिग्दर्शिका"

अंक-55 | कृषि विज्ञान केन्द्र, रा.वि.सि.कृ.वि.वि, उज्जैन | अप्रैल-जून 2022

संरक्षक

डॉ. एस.के. राव

कुलपति

रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.ग्वालियर

मार्गदर्शक

डॉ. वाय.पी. सिंह

संचालक विस्तार सेवाएँ

रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.ग्वालियर

*

डॉ. एस.आर.के. सिंह

निदेशक अटारी

भा.कृ.अ.परिषद, जोन-1, जबलपुर

*

प्रकाशक एवं मुख्य संपादक

डॉ. आर.पी. शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

सह संपादक

डॉ.श्रीमती रेखा तिवारी

(गृह वैज्ञानिक)

तकनीकी सहयोग

डॉ. सुरेन्द्र कुमार कौशिक

(वैज्ञानिक पौध प्रजनन)

डॉ.दिवाकर सिंह तोमर

(सस्य वैज्ञानिक)

श्री डी.के. सूर्यवंशी

(वैज्ञानिक पौध संरक्षण)

डॉ. मोनी सिंह

(वरि. तकनीकी अधिकारी)

श्रीमती गजाला खान

(वरि. तकनीकी अधिकारी)

श्री राजेन्द्र गवली

(तकनीकी अधिकारी)

संपादकीय... प्राकृतिक खेती की आवश्यकता...

वर्तमान में कृषि में होने वाले दुष्परिणामों को रोकने के लिये किसान भाईयों को शनै-शनै परंपरागत खेती को भी अपनाना होगा। जहरीले कीटनाशकों तथा रासायनिक फर्टिलाइजर्स के अंधाधून प्रयोग के कारण ना सिर्फ मृदा स्वास्थ्य को हानि पहुँच रहा है। मानव स्वास्थ्य को भी काफी नुकसान पहुँच रहा है। इन सभी को संतुलित करने हेतु तथा स्थायी कृषि प्रणाली को बरकरार रखने हेतु हम सब को प्राकृतिक खेती तथा जैविक खेती को अपनाना समय की मांग बन चुका है। कम खर्चे में अधिक आय के जरिये हेतु जैविक खेती भी एक विकल्प के रूप में अपना सकते है। जिसमें डेयरी व्यवसाय भी फलफूल जायेगा। बिना पशु पालन के जैविक खेती करना संभव नहीं है। पशुपालन में भी देशी नस्लों को बढ़ावा देना होगा। जैसे कि गिर गाय, साहिवाल, थारपरकर, हरियाण, काली सिन्धी तथा राठी, मुर्रा भैंस, भदावरी, जाफराबादी, सुरली, मेहसाना, नागपुरी, निलीरावी आदि। डेयरी व्यवसाय के कारण हमें ना सिर्फ दूध का उत्पादन मिलेगा।

अपितू भरपूर मात्रा में गोसर भी प्राप्त होगा जिससे जैविक खाद तथा कीटनाशक बनाने में सहायता होगी। खेती में यह परंपरागत नुस्खों को हमें फिर से याद करना होगा।

जैविक राज्य में पूर्णत: एकमात्र राज्य है सिक्किम। प्राकृतिक खेती के मुख्य चार आधार है। जिसमें गोबर की खाद, कम्पोस्ट, जीवाणु खाद, फसल अवशेष और प्रकृति में उपलब्ध खनिज जैसे रॉक फास्टफेट, जिप्सम आदि द्वारा पौधों को पोषक तत्व दिये जाते है। प्राकृतिक खेती में प्रकृति में उपलब्ध जीवाणुओं, मित्र कीट और जैविक कीटनाशक द्वारा फसल को हानिकारक जीवाणुओं से बचाया जाता है।

डॉ. आर.पी. शर्मा

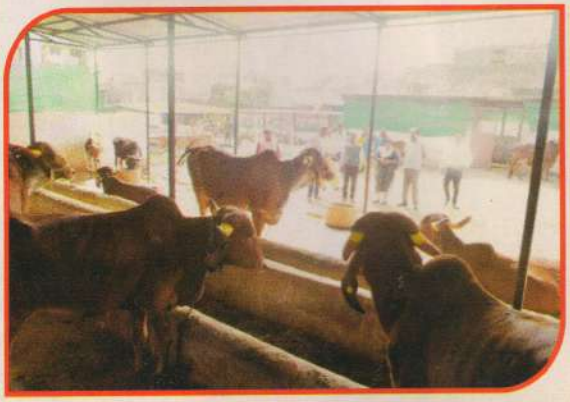

रबी किसान संगोष्ठी

दि. 04.01.2022 को रबी किसान संगोष्ठी का आयोजन सफलतापूर्वक ग्राम जलालखेड़ी में आयोजित किया गया। इसी किसान संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य था कि किसानों को खेती संबंधी आधुनिक तकनीकी की विस्तार से जानकारी दी जाये तथा खेती में आय बढ़ाने के विभिन्न आयामों के बारे में भी बताया। कृषि विज्ञानक डॉ. डी.एस. तोमर, डॉ. रेखा तिवारी तथा श्री एस.के. सूर्यवंशी द्वारा समसामाईक चर्चा भी की। किसानों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उचित निराकरण भीकिये गये। कार्यक्रम में कुल 28 प्रगतिशील किसान भाई उपस्थित थे।

राष्ट्रीय बालिका दिवस

बालिकाओं के उत्थान एवं उनके सर्वांगीण विकास हेतु दि. 24.01.2022 को राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन डॉ. आर.पी. शर्मा के दिशानिर्देश आयोजित किया गया। कार्यक्रम में संस्था की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रेखा तिवारी ने महिलाओं के तथा बालिकाओं पढ़ाई के महत्व के बारे में बताया साथ ही बालिकाओं को स्वावलंबन हेतु स्वरोजगार को बढ़ावा देने हेतु ग्रामीण स्तर पर अपनाने वाले विभिन्न राजेगार परक बिन्दुओं के बारे में बताया। डॉ. मोनी सिंह ने बालिकाओं को स्वयं सहायता समूह की विस्तृत से जानकारी दी। कार्यक्रम से कुल 32 बालिकायें लाभांवित हुई।

प्राकृतिक खेती जागृति कार्यक्रम

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु दि. 28.01.2022 महिदपुर में डॉ. आर.पी. शर्मा के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। खेती में रासायनिक कीटनाशक एवं खादों का अंधाधून प्रयोग से होने वाले दुष्परिभावों को रोकने हेतु प्राकृतिक खेती को अपनाने हेतु किसानों को विभिन्न तकनीकियों को बताया तथा विडियो के माध्यम से भी जागृकता बढ़ाई। जैसे कि धनामृत, जीवामृत, केचुआ खाद तथा दशपर्णी आदि। इस कार्यक्रम में कुल 36 किसान भाई लाभान्वित हुए।

विश्व दाल दिवस

दालों को बढ़ावा देने हेतु तथा किसानों की आय बढ़ाने हेतु दि. 10.02.2022 को विश्व दाल दिवस का सफल आयोजन ग्राम खाचरौद में डॉ. आर.पी. शर्मा (संस्था प्रमुख) के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। डॉ. एस. के. कौशिक द्वारा दालों की विभिन्न प्रजातियों के बारे में बताया साथ ही डॉ .डी.एस. तोमर संतुलित खाद का प्रयोग करके उत्पादन अधिक लने के बारे में बताया। डॉ. रेखा तिवारी द्वारा दालों में मूल्य संवर्धन करके आय बढ़ाने के बारे में बताया। श्री डी.के. सूर्यवंशी ने दालों में कीटनाशक प्रयोगों के विधिवत तरीकों को बताया। श्री राजेन्द्र गवली ने मृदा स्वास्थ्य की जानकारी दी तथा श्रीमती गजाला खान ने इंटरनेट के माध्यम से आधुनिक खेती को अपनाने की बात कही। कार्यक्रम में कुल 32 प्रगतिशील किसान भाई एवं बहनें उपस्थित थी।

राज्य स्तरीय प्रदर्शनी एवं बिक्री मेला

सेंटर फॉर एग्री बिजनेस इन्क्यूबेसन एवं एंटरप्रेनेरशिप का शुभारंभ राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर में दि. 13-14 फरवरी 2022 को किया गया। कार्यक्रम में विशेष तौर से राज्य स्तरीय प्रदर्शनी एवं बिक्री मेला भी लगाया गया था। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्रसिंह तोमर थे।

कृषि मंत्री जी ने किसानों के हितार्थ नये स्टार्ट अप को शुरू करने हेतु प्रेरित किया। विश्व विद्यालय के कुलपति मा. प्रो. डॉ. एस.के. राव ने जिला स्तरीय प्रदर्शनी में लगायें गये विभिन्न खाद्य पदार्थों के व्यवसाय की सराहना की। इसी दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र उज्जैन से रोस्टेड इडामाम तथा अलसी एवं कसुरी मैथी की प्रदर्शनी भी लगाई गयी। जिसमें डॉ. डी.एस. तोमर शस्य वैज्ञानिक तथा डॉ. रेखा तिवारी, गृह वैज्ञानिक ने माननीय कृषि मंत्री जी को रोस्टेड इडामाम (सब्जी वाली सोयाबीन) मूल्य संबंधित पदार्थ का अवलोकन करवाया। जिसकी मंत्री जी ने काफी प्रशंसा की।

सरसों प्रक्षेत्र दिवस

ग्राम बिसनखेड़ा में श्री राहुल पोरवाल जी के प्रक्षेत्र पर दि. 26.02.2022 को सरसों प्रक्षेत्र दिवस डॉ. आर.पी. शर्मा (संस्था प्रमुख) के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रक्षेत्र दिवस का मुख्य उद्देश्य था फसल विविधीकरण के अन्तर्गत सरसों को बढ़ावा देने जिसके अन्तर्गत सरसों की गिरिराज किस्म संस्था द्वारा चयनित किसानों को दी गयी।

''गिरिराज'' किस्म के बारे में उपस्थित किसान भाईयों को विधिवत जानकारी दी गयी साथ ही मूल्य संवर्धन के बारे में भी बताया गया। कार्यक्रम में संस्था के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. तोमर, डॉ. एस.के. कौशिक तथा डॉ. रेखा तिवारी द्वारा अपने विषयानुरूप जानकारी दी। कार्यक्रम में आसपास के गाँव खामली, तिलावदी तथा बिसनखेड़ा के कुल 15 प्रगतिशील किसान भाई लाभान्वित हुए।

अलसी प्रक्षेत्र दिवस

कम पानी में अच्छी उपज देने वाली अलसी की किसम प्रताप-1 को बढ़ावा देने हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा डॉ. आर.पी. शर्मा संस्था प्रमुख के मागदर्शन में ग्राम बिछड़ौद में दि. 26.02.2022 को अलसी प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। श्री रघुनंदन शर्मा जी के प्रक्षेत्र पर कुल 28 किसान भाईयों को अलसी प्रताप-1 के बारे में विस्तृत से जानकारी दी गयी। साथ ही किसान भाई अपनी आय को दोगुना कैसे कर सकते है इस बारे में भी विस्तार से बताया गया। जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया जा सके। कार्यक्रम में डॉ. डी.एस. तोमर, डॉ. एस. के. कौशिक तथा डॉ. रेखा तिवारी ने अपने विषयानुसार जानकारी दी।

कृषक जागरूकता कार्यक्रम

किसानों को नव नवीन तकनीकीयों से अवगत कराने हेतु संस्था प्रमुख डॉ. आर.पी. शर्मा के मार्गदर्शन में ग्राम मडावदा (ब्लॉक खाचरोद) में दि. 01.03.2022 को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में श्री जी.पी. सिंह, संचालक (IIWBR, ICAR) करनाल के अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम गेहूँ की उन्नतशील प्रजातियों के बारे में विस्तृत से चर्चा की गयी तथा किसान भाईयों द्वारा पूछे गये सवालों के यथावत निराकरण किया गया। कार्यक्रम में कुल 157 किसान भाई उपस्थित थे कार्यक्रम में डॉ. एस.के. कौशिक, डॉ. डी.एस. तोमर, श्री राजेन्द्र गवली तथा श्री अजय गुप्ता ने विषयानुरूप जानकारी दी।

चना प्रक्षेत्र दिवस

रबी की प्रमुख फसलों में चना फसल की किस्म आर.वी.एस.-202 की विशेषतायें बताने हेतु दि. 04.03.2022 को ग्राम गुराड़िया गुर्जर में चना प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन डॉ. आर.पी. शर्मा (संस्था प्रमुख) के मार्गदर्शन में श्री ईश्वरसिंह अम्बोदिया के प्रक्षेत्र पर मनाया गया।

कार्यक्रम में डॉ. डी.एस. तोमर (शस्य वैज्ञानिक) ने चना फसल में सतुलित उर्वरक तथा खरपतवारनाशक दवाईयों के बारे में विस्तार से बताया। डॉ. एस.के. कौशिक ने आर.वी.एस.- 202 की विशेषता के बारे में बताया तथा डॉलर व देशी चने की विभिन्न किस्मों के बारे में बताया। कार्यक्रम में कुल 35 प्रगतिशील किसान भाई उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन द्वारा ग्राम-खेमासा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का सफल आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन के मार्गदर्शन में दि. 08.3.2022 को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। डॉ. आर.पी. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिये शिक्षा एवं समानता आज की जरूरत बताते हुये आत्मनिर्भर बनने की बात कही। केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रेखा तिवारी जो विगत कई वर्षों से इस क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये कार्य कर रही हैं ने महिला दिवस आयोजन एवं महत्ता के विषय में प्रकाश डाला। साथ ही गाँव की बेटियों को शिक्षा एवं रोजगार के क्षेत्र में उठाये गये कदमों की विशेष सराहना की।

कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों जैसे की जैविक खेती, मुर्गीपालन, ग्राम स्तरीय स्वरोजगार में उल्लेखनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में श्रीमती प्रकाश परमार-चन्दूखेड़ी, श्रीमती जानीबाई डाबी-खेमासा, सिस्टर दीप्ती तथा श्रीमती अनीता-आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को शॉल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया।

जिन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के मार्गदर्शन में उपरोक्त कार्यों को कृषक महिलाओं के बीच प्रचार एवं प्रसार का कार्य किया। कार्यक्रम में कृपा वेलफेयर सोसायटी के फादर सुनील ने महिला को स्वयं सहायता समूह के जरिये जैविक खेती की तरफ ध्यानाकृर्षित किया।

कार्यक्रम में भाषण प्रतियोगिता भी रखी गयी, जिसमें महिला वर्ग में सौ. राधा परमार-असलाना, सौ. पेपाबाई-खेमासा तथा लीलाबाई-असलाना एवं युवतियों में कु. नेहा अग्रवाल, कु. दिव्या बाघेला एवं कु. साधना बाघेला ग्राम-खेमासा से क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय विजेता रहीं। सफल आयोजन में ग्राम खेमासा जो कि अनुसूचित जाति बाहुल्य ग्राम है जहाँ कि कृषि विज्ञान केन्द्र ने केन्द्र सरकार की योजना का सफल प्रयोग किया था। कार्यक्रम में कुल 58 महिलाओं एवं युवतियों को लाभ प्राप्त हुआ। कृषि विभाग के अंतर्गत आत्मा परियोजना के श्री राजेश चौहान तथा श्री गोपाल एवं फादर सुमित (कृपा वेलफेयर सोसायटी) एवं सचिव श्री परमार जी उपस्थित थे। जिनका सहयोग सराहनी रहा।

गेहूँ प्रक्षेत्र दिवस

रबी की मुख्य फसल गेहूँ में विभिन्न किस्मों को बढ़ावा देने हेतु गेहूँ की फोर्टिफाईड किस्म का प्रक्षेत्र दिवस ग्राम-गुराड़िया गुर्जर में डॉ. आर.पी. शर्मा (संस्था प्रमुख) के दिशानिर्देश में सफलतापूर्वक 14.03.2022 आयोजित किया गया।

श्री संजय कराड़ा के प्रक्षेत्र पर गेहूँ की फोर्टिफाईड किस्म एच.आई.-8759 एवं एच.आई. - 8777 के बारे में विस्तृत से बताया। डॉ. आर.पी. शर्मा ने प्रक्षेत्र दिवस के महत्व पर रोशनी डाली तथा डॉ. रेखा तिवारी ने कुपोषण से बचने हेतु फोर्टिफाईड की विभिन्न किस्मों जैसे पूसा वाणी, पूसा अहिल्या आदि के बारे में भी बताया। डॉ. मोनी सिंह ने गेहूँ की एच.आई. 8759 एवं एच.आई. - 8777 की चर्चा को तथा प्रोटीन से भरपूर इन किस्मों से कुपोषण कम करने की बात कही। कार्यक्रम डॉ. डी.एस. तोमर ने गेहूँ के अलावा अन्य फोर्टिफाईड अनाजों की भी चर्चा की। जैसे कि चावल, मक्का, मूंगफली आदि। कार्यक्रम में कुल 55 किसान तथा किसान महिलायें उपस्थित थी।

मूंग की उन्नत खेती

भूमि तैयारी :- रबी की फसलों के काटने के तुरंत बाद खेत की जुताई कर 4-5 दिन छोड़ दें। तत्पश्चात् पलेवा कर के कल्टीवेटर से 2 बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना लें। इससे नमी भी संरक्षित होगी।

बुवाई :- उज्जैन तथा सम्पूर्ण मालवा में मौसम एवं पानी की उपलब्धता को देखते हुए फरवरी के प्रथम सप्ताह से 15 मार्च तथा मूंग की बोनी कर देना चाहिए। ताकि खरीफ की प्रमुख फसल सोयाबीन की बोनी प्रभावित होगी।

किस्में : टी.जे.एन.-3, एचयूएम-16, एचयूएम-1, पी.डी.एम.-11, पुषा विशाल आदि प्रमुख उन्नत किस्में है।

बीजदर :- ग्रीष्मकालीन मूंग 25-30 कि.ग्रा./लीटर लेना चाहिए तथा 20-25 से.मी. कतार से कतार तथा पौधे-पौधे की दूरी 8-10 से.मी. रखना चाहिए। बीज 4-5 से.मी. गहरा बोऐं।

उर्वरक :-

छ= 20 ड= 25

झ = 40 नछ= 20 कि.ग्रा./हेक्ट.

घ = 20

सिंचाई :- 15 दिन के अंतराल पर प्लेवा के बाद 3-4 सिंचाई मौसम अनुसार देना आवश्यक है।

खरपतवार नियंत्रण :-

खरपतवारनाशी	सक्रिय तत्व	समय
1. पेण्डीमिथिलिन	700 ग्रा./हेक्ट.	0-3 दिन के अंदर
2. इमिजाथायपर	100 ग्रा./हेक्ट.	बुवाई के 20 दिन बाद
3. क्यूजोफाप इथाइल	40-50 ग्रा./हेक्ट.	15-20 दिन बाद

प्रमुख रोग :- पीला मोजेक, सर्कोस्पोरा पर्णदाग, एन्थ्राक्नोज एवं भभूतियाँ प्रमुख रोग है।

नियंत्रण :- बीज उपचार एवं 2-3 वर्ष फसल चक्र अपनायें। प्रमाणित व अनुशंसित किस्म, विषाणुवाहक के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 250 डब्ल्यू.जी., 2 ग्राम/लीटर या ट्राइजोफॉस 2 मि.ली./लीटर का प्रयोग करें। भभूतियाँ रोग की रोकथाम हेतु सल्फर पाउडर 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

फफूंदजनित रोगों की रोकथाम हेतु मेन्कोजेब + कार्बनडाजिम 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

फसल की कटाई एवं मड़ाई : जब फलियां अच्छी तरह पक जाये तो फलियों की तुड़ाई की जानी चाहिए। इसके साथ पकने वाली किस्में लगाना चाहिए। फलियों की तुड़ाई के बाद अच्छी तरह से सुखाकर मड़ाई करें।

उपज : अच्छी तरह से प्रबंधन की गई फसल से 12-15 क्वि. दानों की उपज प्राप्त कर सकते हैं।

अप्रैल माह में किए जाने वाले कार्य

* खरीफ की फसल हेतु मिट्टी परीक्षण के लिए नमूना लेकर प्रयोगशाला भेजें।
* टमाटर, बैंगन, मिर्च की फसल में अनुसंशित पौध संरक्षण उपाय करें।
* पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलाएं।
* प्रति प्रोढ़ पशु (गाय, भैंस) को 50 ग्राम एवं छोटे पशुओं को 25 ग्राम नमक प्रतिदिन के हिसाब से दें।
* गर्मी की गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें।
* खेत की मिट्टी परीक्षण अनिवार्य रूप से कराएं।
* अनाज को भण्डारण पूर्व अच्छी तरह सूखा लें।

मई माह में किए जाने वाले कार्य

* अनाज को भण्डारण पुर्व अच्छी तरह सुखा लें एवं पुरानी कोठियों तथा बोरियों की सफाई कर इन पर मेलाथियान या ई.डी.बी. कीटनाशक घोल का छिड़काव करें।
* ग्रीष्मकालीन मूंग एवं उडद में पक रही फलियों की तुडाई करते रहे।
* खरीफ फसलों की योजना स्वरूप खाद, बीज, उर्वरक एवं बीजोपचार हेतु दवाऐं तथा जैव उर्वरक की व्यवस्था करें।
* फलदार पौधों को लगाने के लिए निर्धारित दूरी पर गड्ढों की खुदाई करें।
* पशुओं को ग लगोंटू एवं लगड़ी रोग का टीका अवश्य लगवाएँ।
* गर्मी से बचने के लिए पशुओं को छायादार स्थान में रखे साथ ही साथ पानी कम से कम दिन में तीन बार पिलाएँ।
* खरीफ प्याज की नर्सरी 7 मी. x 0.75मी.x0.15 मी. आकार की 19-20 क्यारी तैयार करें जो कि 1.00 हे. रोपण के लिये पर्याप्त है।
* ग्रीष्म कालीन हरे चारे की फसल - ज्वार, मक्का एवं लोबिया में 10-12 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें।

जून माह में किए जाने वाले कार्य

* सोयाबीन (जे.एस.-9560, जे.एस.-9305, जे.एस.2034, जे.एस. 2029, आर.व्ही.एस.-2000-04) आदी के प्रमाणित या आधार बीज की व्यवस्था करें तथा मानसून आगमन पर बुवाई करें।
* फफूंद नाशक से बीजोपचार तथा उसके बाद जैव उर्वरक से निवेशन करके ही खरीफ फसलों की बोनी करें।
* गेंदा व जीनिया की पौधे लगावे।
* फलदार वृक्षों के पिछले माह में खोदे गये गड्ढों में खाद, नीम की खली तथा मिट्टी की समान मात्रा से भरने का कार्य करें।
* कृषि यंत्रों की आईलिंग, ग्रिसिंग कर तैयार करके छायादार स्थान पर रखे।
* बोनी हेतु कम से कम दो प्रजातियों की गुणवत्तायुक्त बीज प्रबंध करें साथ ही फसल विविधीकरण को भी अपनाएं।

संपर्क सूत्र-कृषि विज्ञान केन्द्र रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.

विक्रम नगर रेल्वे स्टेशन के सामने, उज्जैन (म.प्र.)0734-2526976

बुक-पोस्ट

प्रति,_____

प्रेषक :

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र, विक्रम नगर रेल्वे स्टेशन के सामने,

उज्जैन (म.प्र.) 465 010